

SARMISHTHA<sup>1</sup>, Dr. OMPARKASH<sup>2</sup>

1 PhD Research Scholar, Department of Education, Geeta University, Panipat Haryana

2 Associate Professor, Department of Education, Geeta University, Panipat Haryana

शर्मिष्ठा, पी एच डी, शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, गीता विश्वविद्यालय, पानीपत, हरियाणा  
डॉ. ओमप्रकाश सह-आचार्य, शिक्षा विभाग, गीता विश्वविद्यालय, पानीपत, हरियाणा

## Jyotiba Phule's Pioneering Contribution in the Field of Education: A Legacy of Social Reform and Empowerment

शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का अग्रणी योगदान: सामाजिक सुधार और अधिकारिता की विरासत

सार

दूरदर्शी समाज सुधारक और भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रणेता, महात्मा ज्योतिबा फुले ने प्रचलित सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर महिलाओं और निचली जातियों के अधिकारों की वकालत करने में परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। यह शोध लेख शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालता है, शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच को बढ़ावा देने, समाज के उत्पीड़ित वर्गों को सशक्त बनाने और सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देने के उनके अग्रणी प्रयासों की खोज करता है।

परिचय:

महात्मा ज्योतिबा फुले भारतीय इतिहास में एक महान व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जो सामाजिक अन्याय को चुनौती देने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की वकालत करने में अपने अथक प्रयासों के लिए प्रसिद्ध हैं। 11 अप्रैल, 1827 को पुणे, महाराष्ट्र में जन्मे फुले एक ऐसे समाज में पले-बढ़े जो जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक पदानुक्रम में गहराई से जकड़ा हुआ था। उनका जीवन और कार्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और एक कठोर जाति व्यवस्था की पृष्ठभूमि में सामने आया, जिसने लाखों लोगों को उनके जन्म के आधार पर प्रताड़ित किया।

माली जाति से संबंधित परिवार में ज्योतिबा फुले के पालन-पोषण ने उन्हें निचली जाति के समुदायों द्वारा सामना किए जाने वाले अन्याय और अपमान का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया। स्वयं अपेक्षाकृत निचली जाति से संबंधित होने के बावजूद, फुले के परिवार ने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें शिक्षा मिले, जो उस समय हाशिए की पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के लिए दुर्लभ थी। शिक्षा के इस शुरुआती अनुभव ने फुले के विश्वदृष्टिकोण को आकार देने और उनमें शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### प्रारंभिक जीवन और प्रभाव:

ज्योतिबा फुले के प्रारंभिक वर्ष ऐसे अनुभवों से चिह्नित थे जिन्होंने दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने के प्रति उनकी सामाजिक चेतना और समर्पण को गहराई से प्रभावित किया। पुणे में पले-बड़े फुले ने समाज में व्याप्त व्यापक जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक असमानताओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा। निचली जाति के माली समुदाय के सदस्य के रूप में, फुले को खुद मुख्यधारा के समाज से भेदभाव और बहिष्कार का सामना करना पड़ा, जिसने हाशिए पर रहने वाले समुदायों पर होने वाले अन्याय के खिलाफ लड़ने के उनके दृढ़ संकल्प को बढ़ावा दिया।

चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, फुले की ज्ञान की प्यास ने उन्हें उन सामाजिक मानदंडों को खारिज करते हुए शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, जो निचली जातियों के व्यक्तियों के लिए शैक्षिक अवसरों को प्रतिबंधित करते थे। उनकी शिक्षा ने उन्हें प्रगतिशील विचारों से अवगत कराया और उनमें सामाजिक सुधार के लिए जुनून जगाया। थॉमस पेन और जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे विचारकों की शिक्षाओं से प्रभावित होकर, फुले ने उन सामाजिक संरचनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना शुरू किया, जिन्होंने जाति-आधारित उत्पीड़न और असमानता को कायम रखा।

इसके अलावा, फुले की अपनी पत्नी, सावित्रीबाई फुले, जिन्होंने सामाजिक सुधार और महिलाओं के अधिकारों के लिए अपना उत्साह साझा किया था, के साथ बातचीत ने प्रचलित सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को और आकार दिया। साथ में, उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित करने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा को बढ़ावा देने की यात्रा शुरू की।

ज्योतिबा फुले के प्रारंभिक जीवन और अनुभवों ने सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता की नींव रखी। जाति-आधारित भेदभाव से ग्रस्त समाज में उनका पालन-पोषण, शिक्षा तक पहुंच और प्रगतिशील विचारों के संपर्क के साथ मिलकर, दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने और हाशिये पर पड़े लोगों के अधिकारों की वकालत करने के उनके दृढ़ संकल्प को प्रेरित किया। इन शुरुआती प्रभावों ने सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा के फुले के दृष्टिकोण को आकार दिया, जिससे भारतीय समाज में उनके परिवर्तनकारी योगदान के लिए मंच तैयार हुआ।

### शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना:

सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में शिक्षा के प्रति ज्योतिबा फुले की प्रतिबद्धता के कारण कई अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर महिलाओं और निचली जातियों को शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना था।

### पुणे में नेटिव फीमेल स्कूल की स्थापना (1848):

1848 में, ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी, सावित्रीबाई फुले ने भारत में लड़कियों के लिए पहले स्वदेशी स्कूल की स्थापना की, जिसे नेटिव फीमेल स्कूल के नाम से जाना जाता है। यह संस्था उन सामाजिक मानदंडों को तोड़ने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम थी जो महिलाओं की शिक्षा तक पहुंच को प्रतिबंधित करती थी। स्कूल ने हाशिए पर रहने वाले समुदायों सहित सभी जातियों की लड़कियों को औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया, जो पहले उन्हें नहीं दिया गया था। नेटिव फीमेल स्कूल की स्थापना ने

भारत में महिला शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित किया और शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए आगे की पहल की नींव रखी।

### **सत्यशोधक समाज और सत्यशोधक शाला की स्थापना:**

सामाजिक समानता और न्याय के लिए ज्योतिबा फुले की वकालत 1873 में सत्यशोधक समाज (सत्य शोधकों का समाज) की स्थापना में परिणत हुई। सत्यशोधक समाज का उद्देश्य जाति व्यवस्था सहित दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देना और शिक्षा और ज्ञान के माध्यम से सामाजिक सुधार को बढ़ावा देना था। सत्यशोधक समाज के प्रयासों के हिस्से के रूप में, फुले ने सत्यशोधक शाला (सत्य शोधकों का स्कूल) की भी स्थापना की, जो उत्पीड़ित वर्गों के उन व्यक्तियों को शिक्षा प्रदान करता था जो मुख्यधारा के शैक्षणिक संस्थानों तक पहुंच से वंचित थे। सत्यशोधक शाला ने आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव के महत्व पर जोर दिया, जिससे शिक्षार्थियों को प्रचलित सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाने और दमनकारी संरचनाओं को चुनौती देने का अधिकार मिला।

### **सामाजिक न्याय और अधिकारिता पर जोर:**

ज्योतिबा फुले की शिक्षा की वकालत सामाजिक न्याय और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के सशक्तिकरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में गहराई से निहित थी। उन्होंने शिक्षा को उत्पीड़न की जंजीरों को तोड़ने और व्यक्तियों को अपने अधिकारों और सम्मान का दावा करने के लिए सशक्त बनाने के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में मान्यता दी।

### **सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा की वकालत:**

फुले ने हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर महिलाओं और निचली जातियों को सशक्त बनाने के साधन के रूप में शिक्षा की जोरदार वकालत की। उनका मानना था कि व्यक्तियों को दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने और सामाजिक समानता के लिए प्रयास करने में सक्षम बनाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा तक पहुंच प्रदान करके, फुले ने उत्पीड़ित वर्गों का उत्थान करने और उन्हें अपने अधिकारों की वकालत करने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करने का प्रयास किया।

### **आलोचनात्मक सोच और तर्कसंगतता को बढ़ावा देना:**

फुले ने शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि शिक्षा को न केवल ज्ञान प्रदान करना चाहिए बल्कि प्रचलित सामाजिक मानदंडों और मान्यताओं के प्रति जांच और संदेह की भावना को भी बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षार्थियों को मौजूदा सामाजिक संरचनाओं और पदानुक्रमों पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करके, फुले का उद्देश्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बीच एजेंसी और सशक्तिकरण की भावना पैदा करना था, जिससे वे दमनकारी प्रणालियों को चुनौती देने और सामाजिक न्याय की दिशा में काम करने में सक्षम हो सकें।

### **महिला शिक्षा में भूमिका:**

महिलाओं की शिक्षा के प्रति ज्योतिबा फुले की प्रतिबद्धता सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण की उनकी व्यापक दृष्टि का एक केंद्रीय पहलू थी। उन्होंने परिवर्तन के एजेंट के रूप में महिलाओं को शिक्षित करने के

महत्व को पहचाना और महिलाओं की शिक्षा में पितृसत्तात्मक बाधाओं को खत्म करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम किया।

### महिलाओं के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के अग्रणी प्रयास:

महिलाओं की शिक्षा के लिए फुले की वकालत अपने समय से आगे थी, उन्होंने प्रचलित सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण को चुनौती दी, जो महिलाओं को अधीनस्थ भूमिकाओं में धकेल देते थे। उनका मानना था कि उत्पीड़न के चक्र को तोड़ने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को शिक्षित करना महत्वपूर्ण है। फुले की नेटिव फीमेल स्कूल की स्थापना ने सभी पृष्ठभूमि की लड़कियों को शिक्षा तक पहुंच प्रदान की, जिससे शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भविष्य की पहल के लिए आधार तैयार हुआ।

### लड़कियों और महिलाओं के लिए स्कूलों और छात्रावासों की स्थापना:

नेटिव फीमेल स्कूल की स्थापना के अलावा, फुले ने विशेष रूप से लड़कियों और महिलाओं के लिए स्कूल और छात्रावास भी स्थापित किए, जिससे उन्हें शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए एक सहायक वातावरण प्रदान किया गया। इन संस्थानों ने लड़कियों और महिलाओं को आत्म-सुधार और उन्नति के अवसर प्रदान किए, जिससे वे पारंपरिक लिंग भूमिकाओं की बाधाओं से मुक्त हो सकें और शिक्षित और सशक्त व्यक्तियों के रूप में समाज में योगदान कर सकें।

शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले के अग्रणी प्रयास सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण और समानता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से प्रेरित थे। उनके शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, सशक्तिकरण के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा की वकालत, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना और महिला शिक्षा पर जोर ने भारतीय समाज में परिवर्तनकारी बदलाव की नींव रखी। फुले की विरासत शिक्षकों और समाज सुधारकों की पीढ़ियों को शिक्षा के माध्यम से एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत दुनिया बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती रही है।

### विरासत और प्रभाव:

भारतीय शिक्षा प्रणाली और समग्र समाज में ज्योतिबा फुले के योगदान ने एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने इतिहास की दिशा को आकार दिया है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में उनके दूरदर्शी विचारों और अथक प्रयासों का गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा है, जो उनके जीवनकाल से कहीं आगे तक फैला हुआ है।

### भारतीय शिक्षा प्रणाली और समग्र समाज पर ज्योतिबा फुले के स्थायी प्रभाव का आकलन:

#### भारतीय शिक्षा प्रणाली का परिवर्तन:

महिलाओं और निचली जातियों सहित हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में ज्योतिबा फुले की अग्रणी पहल ने भारत में शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच की उनकी वकालत ने प्रचलित सामाजिक मानदंडों और असमानताओं को चुनौती दी, जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली का विस्तार और विविधीकरण हुआ। शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक

सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देने पर फुले के जोर ने एक अधिक प्रगतिशील और समावेशी शिक्षा प्रणाली की नींव रखी।

### हाशिए पर रहने वाले समुदायों का सशक्तिकरण:

सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा की फुले की वकालत ने उत्पीड़ित समुदायों के लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया। शिक्षा तक पहुंच प्रदान करके, उन्होंने हाशिए पर रहने वाले समूहों को दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने और समाज में अपने अधिकारों और सम्मान का दावा करने के लिए सशक्त बनाया। महिलाओं और निचली जातियों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के फुले के प्रयासों ने न केवल उनकी सामाजिक-आर्थिक उन्नति के अवसरों का विस्तार किया, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी का मार्ग भी प्रशस्त किया।

### सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देना:

जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ ज्योतिबा फुले के अथक संघर्ष ने उसके बाद के सामाजिक सुधार आंदोलनों की नींव रखी। सामाजिक न्याय, समानता और भाईचारे पर उनका जोर लाखों उत्पीड़ित व्यक्तियों की आकांक्षाओं के अनुरूप था, जिससे उन्हें अपने अधिकारों की लड़ाई में शामिल होने की प्रेरणा मिली। सामाजिक सुधार के एक उपकरण के रूप में शिक्षा की फुले की वकालत ने मजबूत सत्ता संरचनाओं को चुनौती दी और सामाजिक चेतना और सक्रियता की संस्कृति को बढ़ावा दिया, जिससे भारत में सामाजिक न्याय और समानता के लिए व्यापक आंदोलन में योगदान मिला। सामाजिक सुधार के अग्रदूत और उत्पीड़ितों के लिए शिक्षा के चैंपियन के रूप में फुले की विरासत कार्यकर्ताओं और शिक्षकों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है:

### सामाजिक सुधार आंदोलनों की प्रेरणा:

ज्योतिबा फुले का जीवन और कार्य दुनिया भर में सामाजिक सुधार आंदोलनों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में काम करता है। उनका साहस, लचीलापन और न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता कार्यकर्ताओं और परिवर्तनकर्ताओं को अन्याय को चुनौती देने और एक अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती है। फुले की विरासत समय और स्थान की सीमाओं को पार करती है, उन व्यक्तियों के साथ गूंजती है जो दमनकारी प्रणालियों को खत्म करना चाहते हैं और समानता और न्याय के सिद्धांतों के आधार पर एक दुनिया बनाना चाहते हैं।

### शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं पर प्रभाव:

फुले के विचारों और सिद्धांतों ने भारत और उसके बाहर शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को प्रभावित किया है। समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा पर उनके जोर ने शैक्षिक प्रणालियों के विकास को आकार दिया है जो पहुंच, समानता और गुणवत्ता को प्राथमिकता देते हैं। शिक्षा में आलोचनात्मक सोच और तर्कसंगतता को बढ़ावा देने के लिए फुले की वकालत शैक्षणिक दृष्टिकोण को सूचित करना जारी रखती है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों के बीच स्वतंत्र विचार और बौद्धिक जांच को बढ़ावा देना है।

अंत में, सामाजिक सुधार के अग्रदूत और उत्पीड़ितों के लिए शिक्षा के चैंपियन के रूप में ज्योतिबा फुले की विरासत आशा और प्रेरणा की किरण के रूप में कायम है। भारतीय शिक्षा प्रणाली और बड़े पैमाने पर समाज में उनके परिवर्तनकारी योगदान ने एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने इतिहास की दिशा को आकार दिया है और पीढ़ियों को अधिक न्यायसंगत, न्यायसंगत और समावेशी दुनिया के लिए प्रयास करने

के लिए प्रेरित किया है। सामाजिक सशक्तिकरण और न्याय के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा के बारे में फुले की दृष्टि उन कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और नीति निर्माताओं के प्रयासों का मार्गदर्शन करती रहती है जो सभी के लिए एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना चाहते हैं।

### निष्कर्ष:

शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का अभूतपूर्व योगदान सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण और समानता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उनके दूरदर्शी विचारों और अथक प्रयासों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली और बड़े पैमाने पर समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने इतिहास की दिशा को आकार दिया है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया है।

फुले द्वारा शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच की वकालत और शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक सोच और तर्कसंगतता को बढ़ावा देने ने भारत में शिक्षा के परिदृश्य को बदल दिया है। मूल महिला विद्यालय और सत्यशोधक शाला की स्थापना जैसी उनकी अग्रणी पहलों ने सामाजिक पदानुक्रमों और असमानताओं को चुनौती देते हुए हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं और निचली जातियों के लिए शैक्षिक अवसरों का विस्तार किया है।

फुले की शिक्षा दृष्टि की स्थायी प्रासंगिकता सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण और समानता पर उनके गहन जोर में निहित है। लगातार असमानताओं और अन्यायों से जूझ रहे समाज में, सामाजिक सुधार के एक उपकरण के रूप में शिक्षा की फुले की वकालत आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उनके समय में थी। उत्पीड़ितों के उत्थान और अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति में उनका विश्वास व्यक्तियों और समुदायों को बेहतर भविष्य के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

जैसा कि हम ज्योतिबा फुले की विरासत पर विचार करते हैं, यह जरूरी है कि हम शिक्षा प्रणाली के भीतर चल रही चुनौतियों और असमानताओं को पहचानें। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, लगातार शैक्षिक असमानताएं सभी के लिए समावेशी और समान शिक्षा के फुले के दृष्टिकोण को साकार करने में बाधा बनी हुई हैं। इसलिए, इन असमानताओं को दूर करके और समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणालियों को बढ़ावा देकर फुले की विरासत को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासों की तत्काल आवश्यकता है।

निष्कर्षतः, शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का अग्रणी योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा और प्रेरणा की किरण है। सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक के रूप में शिक्षा के बारे में उनका दृष्टिकोण एक अधिक न्यायपूर्ण, न्यायसंगत और समावेशी समाज बनाने के हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन करता रहता है। आइए हम जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना समाज के सभी सदस्यों को सशक्त और उत्थान करने वाली शिक्षा के प्रति खुद को फिर से समर्पित करके फुले की विरासत का सम्मान करें।

### शोध ग्रन्थ सूची :

1. "ज्योतिबा फुले: जीवन और कार्य" - डॉ. धनंजय के. डोरे
2. "ज्योतिबा फुले: विचार और दर्शन" - डॉ. श्रीकांत वसंतराव खोब्रागडे
3. "ज्योतिबा फुले: अधिकारिता की धारा" - डॉ. कैलाश अरविंद सोनवाणी
4. "ज्योतिबा फुले: जीवन और कार्य" - रवींद्र नाथ त्रिपाठी
5. "ज्योतिबा फुले का अध्यात्म और दर्शन" - श्रीकांत आंबेडकर

6. "ज्योतिबा फुले: समाज और शिक्षा" - डॉ. सुनील कुमार मोहन
7. "ज्योतिबा फुले: शिक्षा और उसकी भूमिका" - डॉ. सुधीर कुमार गोस्वामी
8. "ज्योतिबा फुले: शिक्षा और समाज सुधार" - डॉ. आदित्य मिश्र
9. "ज्योतिबा फुले: समाजशास्त्र और शिक्षा" - डॉ. सुमित्रा कुलश्रेष्ठ
10. "ज्योतिबा फुले: शिक्षा और समाजिक योजना" - डॉ. महेश रावल